पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.09.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-08 आश्विन-2082 दयानन्दाब्द 201 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.09.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 47वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय आर्य गोष्ठी हर्षोल्लास से सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के आदर्शो को अपनाकर देश की दशा और दिशा बदले –रेखा गुप्ता मुख्यमंत्री दिल्ली

प्रथम चित्र में आर्य समाज के गणमान्य आर्य नेता। द्वितीय चित्र में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का अभिनंदन, आनंद चौहान, अजय चौहान का सम्मान। तृतीय चित्र में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता उद्बोधन देते हुए एवं खचाखच भरा सभागार।

नई दिल्ली, रविवार, 14 सितंबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 47वें स्थापना दिवस व आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में 'राष्ट्रीय आर्य गोष्ठी' का आयोजन आर्य समाज डिफेंस कॉलोनी नई दिल्ली में किया गया जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ के साथ ब्रह्मा आचार्या श्रुति सेतिया ने किया। मुख्य अतिथि दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक नई क्रांति का सूत्रपात किया। हम उनके आदर्शो को अपनाकर उनके कार्यों को आगे बढ़ाएं। उन्होंने आगे कहा कि मोदी जी नेता नहीं संत हैं। एक लय और ताल में दिन रात जन कल्याण के कार्य करते हैं। वे स्वामी दयानन्द के आदर्शो को लेकर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने देश के सम्मान को विश्व में बढ़ाया है हम भी उन आदर्शो को लेकर आगे बढ़ें देश की दिशा और दशा बदलते रहे। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि युवाओं को संस्कारवान, देश भक्त बनाने का कार्य तीव्र गति आगे बढ़ेगा यह समय की मांग है। शिक्षाविद् आनंद चौहान, अजय चौहान ने अपनी शुभकामनाएं दीं उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी पर राष्ट्र को गर्व होना चाहिए।आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह ने ओम ध्वज फहराया। वैदिक विद्वान डॉ. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, वीरेंद्र विक्रम,प्रो. नरेंद्र आहूजा विवेक, गवेन्द्र शास्त्री, डॉ सुनील रहेजा,गायत्री मीना आदि ने अपने विचार रखे उन्होंने कहा कि आर्य समाज पुनरू सक्रिय होकर राष्ट्र को मजबूत करेगा और अन्धविश्वास पाखंड के विरुद्ध जन जागरण करेगा। गायक नरेन्द्र आर्य सुमन, प्रवीण आर्य(गाजियाबाद), प्रवीन आर्या पिंकी के मधुर गीतों ने सभी को आनन्दित किया। राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया और आशा व्यक्त की कि सभी नई ऊर्जा के साथ आर्य समाज के लिए अपना कार्य करेगें। 40 वर्षो से सक्रिय वीरेन्द्र आहूजा व धर्म पाल आर्य को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रमुख रूप से रामकुमार सिंह, यशोवीर आर्य, अरुण आर्य,राजेश मेहंदीरता, आर्य ,स्वतंत्र कुकरेजा, रविन्द्र आर्य, श्रीकृष्ण दहिया, जितेंद्र सिंह आर्य, ईश आर्य, सुशील भाटिया, डॉ प्रमोद सक्सेना,सुभाष शर्मा, देवेंद्र आर्य, सुरेश आर्य,कैप्टन अशोक गुलाटी, संजय गुप्ता,दीना नाथ नागिया, अंजू मेहरोत्रा ,देवेन्द्र भगत, आस्था आर्य, आदि उपस्थित थे।

हिन्दी दिवस
14 सितम्बर पर–

स्वामी दयानन्द और हिन्दी

–मनमोहन कुमार आर्य

भारतवर्ष के इतिहास में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पराधीन भारत में सबसे पहले राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए हिन्दी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण जानकर मन, वचन व कर्म से इसका प्रचार–प्रसार किया। उनके प्रयासों का ही परिणाम था कि हिन्दी शीघ्र लोकप्रिय हो गई। यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी को स्वामी दयानन्द जी ने आर्यभाषा का नाम दिया था। स्वतन्त्र भारत में 14 सितम्बर 1949 को सर्वसम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया जाना भी स्वामी दयानन्द के इससे 77 वर्ष पूर्व आरम्भ किए गये कार्यों का ही सुपरिणाम था। प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनेक पहलुओं पर स्वामी दयानन्द का अक्षुण प्रभाव स्वीकार करते हैं और हिन्दी पर साम्राज्यवादी होने के आरोपों को अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि यदि साम्राज्यवाद शब्द का हिन्दी वालों पर कुछ प्रभाव है भी, तो उसका सारा दोष अहिन्दी भाषियों का है। इन अहिन्दी–भाषियों का अग्रणीय वह स्वामी दयानन्द को मानते हैं और लिखते हैं कि इसके लिए उन्हें प्रेरित भी किसी हिन्दी भाषी ने नहीं अपितु एक बंगाली सज्जन श्री केशवचन्द्र सेन ने किया था।

स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, 1825 में गुजरात राज्य के राजकोट जनपद में होने के कारण गुजराती उनकी स्वाभाविक रूप से मातृभाषा थी। उनका अध्ययन–अध्यापन संस्कृत में हुआ था, इसी कारण वह संस्कृत में ही वार्तालाप, व्याख्यान, लेखन, शास्त्रार्थ तथा शंका–समाधान आदि किया करते थे। 16 दिसम्बर, 1872 को स्वामी जी वैदिक मान्यताओं के प्रचारार्थ भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता पहुंचे थे और वहां उन्होंने अनेक वैदिक धर्म प्रचार सभाओं में संस्कृत में व्याख्यान दिये थे। ऐसी ही एक सभा में स्वामी दयानन्द के संस्कृत भाषण का बंगला में अनुवाद गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज, कलकत्ता के उपाचार्य पं. महेश चन्द्र न्यायरत्न कर रहे थे। अनुवादक श्री न्यायरत्न ने स्वामी दयानन्द के व्याख्यान के अनेक स्थानों के सही अनुवाद न कर उसके स्थान पर अपनी विपरीत मान्यताओं को प्रकट किया जिससे संस्कृत कालेज के श्रोताओं ने उनका विरोध किया। विरोध के कारण श्री न्यायरत्न बीच में ही सभा छोड़कर चले गये थे। बाद में स्वामी दयानन्द जी को श्री केशवचन्द्र सेन ने सुझाव दिया कि वह संस्कृत के स्थान पर हिन्दी को अपनायें। स्वामी दयानन्द जी ने श्री केशवचन्द्र सेन का यह सुझाव तत्काल स्वीकार कर लिया। यह दिन हिन्दी भाषा के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी कि जब एक 47 वर्षीय गुजराती मातृभाषा के संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान स्वामी दयानन्द ने हिन्दी अपनाने का सुझाव मिलने पर तत्काल हिन्दी भाषा को अपना लिया। ऐसा दूसरा उदाहरण इतिहास में अनुपलब्ध है। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द जी ने जो प्रवचन किए उनमें वह हिन्दी का प्रयोग करने लगे।

विश्व में प्रचलित सभी मत–मतान्तरों सहित वैदिक धर्म का सत्य सत्य परिचय कराने वाला ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है जिसकी रचना स्वामी दयानन्द जी ने की है। यह ग्रन्थ तर्क, युक्ति व प्रमाणों पर आधारित ग्रन्थ है जो देश–विदेश में विगत 146 वर्षों से सत्य धर्म के ज्ञान व मत–मतान्तरों की समीक्षा जानने के लिए उत्सुकता एवं श्रद्धा से पढ़ा जाता है। फरवरी, 1872 में हिन्दी को अपने व्याख्यानों व ग्रन्थों के लेखन की भाषा के रूप में स्वीकार करने के लगभग 2 वर्ष पश्चात ही स्वामी जी ने 2 जून 1874 को इस सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के प्रथम आदिम सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन आरम्भ किया और लगभग 3 महीनों में पूरा कर डाला। श्री विष्णु प्रभाकर इतने अल्प समय में स्वामी जी द्वारा हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश जैसा उच्च कोटि का ग्रन्थ लिखने पर इसे आश्चर्यजनक घटना मानते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के पश्चात स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ लिखे जो सभी हिन्दी में हैं। उनके ग्रन्थ उनके जीवन काल में ही देश की सीमा पार कर विदेशों में भी लोकप्रिय हुए। विश्व विख्यात विद्वान प्रो. मैक्समूलर ने स्वामी दयानन्द की पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा कि वैदिक साहित्य का आरम्भ ऋग्वेद से एवं अन्त स्वामी दयानन्द जी की ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर होता है। प्रो. मैक्समूलर की स्वामी दयान्द के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रति यह प्रशस्ति उनके वेद विषयक ज्ञान, उनके कार्यों, वेदों के प्रचार–प्रसार के प्रति उनके योगदान एवं गौरव के अनुरूप है। स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश एवं अन्य ग्रन्थों को इस बात का गौरव प्राप्त है कि धर्म, दर्शन एवं संस्कृति जैसे क्लिष्ट व विशिष्ट विषय को सर्वप्रथम उनके द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत कर उसे सर्वजन सुलभ किया गया जबकि इससे पूर्व इस पर संस्कृत निष्णात ब्राह्मण वर्ग का ही एकाधिकार था जिसमें इन्हें संकीर्ण एवं संकुचित कर दिया था और वेदों का लाभ जनसाधारण को नहीं मिल रहा था जिसके वह अधिकारी थे।

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के लेखन व प्रकाशन के कुछ समय पश्चात थियोसोफिकल सोसायटी की नेत्री मैडम बैलेवेटेस्की ने स्वामी दयानन्द से उनके हिन्दी में लिखित ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद की अनुमति मांगी तो स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें 31 जुलाई, 1879 को विस्तृत पत्र लिख कर अनुवाद से हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं प्रगति में आने वाली बाधाओं से परिचित कराया। स्वामी जी ने लिखा कि अंग्रेजी अनुवाद सुलभ होने पर देश–विदेश में जो लोग उनके ग्रन्थों को समझने के लिए संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं, वह समाप्त हो जायेगा। हिन्दी के इतिहास में शायद कोई विरला ही व्यक्ति होगा जिसने अपनी हिन्दी पुस्तकों का अनुवाद इसलिए नहीं होने दिया जिससे अनुदित पुस्तक के पाठक हिन्दी सीखने से विरत होकर हिन्दी प्रसार में साधक नहीं हो सकेंगे।

हरिद्वार में एक बार व्याख्यान देते समय पंजाब के एक श्रद्धालु भक्त द्वारा स्वामी जी से उनकी पुस्तकों का उर्दू अनुवाद कराने की प्रार्थना करने पर स्वामी दयानन्द जी ने आवेशपूर्ण शब्दों में कहा था कि अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। देवनागरी के अक्षर सरल होने से थोड़े ही दिनों में सीखे जा सकते हैं। हिन्दी भाषा भी सरल होने से सीखी जा सकती है। हिन्दी न जानने वाले एवं इसे सीखने का प्रयत्न न करने वालों से उन्होंने पूछा कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर यहां की भाषा हिन्दी को सीखने में परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है? श्रोताओं को सम्बोधित कर उन्होंने कहा, ''आप तो मुझे अनुवाद की सम्मति देते हैं परन्तु दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक देवनागरी अक्षरों का प्रचार होगा।'' इस स्वर्णिम स्वप्न के द्रष्टा स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में एक स्थान पर लिखा है कि आर्यावर्त्त (भारत वर्ष का प्राचीन नाम) भर में भाषा का एक्य सम्पादन करने के लिए ही उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों को आर्य भाषा (हिन्दी) में लिखा एवं प्रकाशित किया है। अनुवाद के सम्बन्ध में अपने हृदय में हिन्दी के प्रति सम्पूर्ण प्रेम को प्रकट करते हुए वह कहते हैं, ''जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी, वह इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे।'' यही नहीं आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए उन्होंने हिन्दी सीखना अनिवार्य किया था। भारत वर्ष की तत्कालीन अन्य संस्थाओं में हम ऐसी कोई संस्था नहीं पाते जहां एकमात्र हिन्दी के प्रयोग की बाध्यता हो।

सन् 1882 में ब्रिटिश सरकार ने डा. हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे भारत में राजकार्य के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा। यह आयोग हण्टर कमीशन के नाम से जाना गया। यद्यपि उन दिनों सरकारी कामकाज में उर्दू–फारसी एवं अंग्रेजी का प्रयोग होता था परन्तु स्वामी दयानन्द के सन् 1872 से 1882 तक व्याख्यानों, ग्रन्थों, शास्त्रार्थों तथा आर्य समाजों द्वारा वेद प्रचार एवं उसके अनुयायियों की हिन्दी निष्ठा से हिन्दी भी सर्वत्र लोकप्रिय हो गई थी। इस हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी ने देश की सभी आर्य समाजों को पत्र लिखकर बड़ी संख्या में हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन हण्टर कमीशन को भेजने की प्रेरणा की और जहां से ज्ञापन नहीं भेजे गये उन्हें स्मरण पत्र भेज कर सावधान और पुनः प्रेरित किया। आर्य समाज फर्रूखाबाद के स्तम्भ बाबू दुर्गादास को भेजे पत्र में स्वामी जी ने लिखा, ''यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके यह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ (अर्थात् हिन्दी राजभाषा बना दी गई) तो आशा है, मुख्य सुधार की नींव पड़ जावेगी।'' स्वामी जी की प्रेरणा के परिणामस्वरुप देश के कोने–कोने से आयोग को बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे। कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मैमोरियल भेजे गए जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया यह कार्य भी इतिहास की अन्यतम घटना है। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से जिन प्रमुख लोगों ने हिन्दी सीखी उनमें जहां अनेक रियासतों के राज परिवारों के सदस्य थे वहीं कर्नल एच. ओ. अल्काट आदि विदेशी महानुभाव भी थे जो इंग्लैण्ड में स्वामी जी की प्रशंसा सुनकर उनसे मिलने भारत आये थे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि शाहपुरा, उदयपुर, जोधपुर आदि अनेक स्वतन्त्र रियासतों के महाराजा स्वामी दयानन्द के अनुयायी थे और स्वामी जी की प्रेरणा पर उन्होंने अपनी रियासतों में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया था।

स्वामी दयानन्द संस्कृत व हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के जानने व पढ़ने के पक्षधर भी थे। वह विरोधी किसी भी भाषा के नहीं थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि जब पुत्र–पुत्रियों की आयु पांच वर्ष हो जाये तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्यदेशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। एक अन्य प्रकरण में आदिम सत्यार्थ प्रकाश में मूर्तिपूजा के इतिहास से परिचय

कराने के साथ इस मूर्तिपूजा से आयी गुलामी के प्रसंग में अन्यदेशीय भाषाओं के अध्ययन के समर्थन में उन्होंने विस्तार से लिखा है। यह पूरा प्रसंग इसकी महत्ता के कारण प्रस्तुत है। वह लिखते है कि 'न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि। हस्तिना ताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमन्दिरम्।।1।।' इत्यादि श्लोक (हमारे मूर्तिपूजक बन्धुओं ने) बनाए हैं कि मुसलमानों की भाषा बोलनी और सुननी भी नहीं चाहिए और यदि पागल हाथी मूर्तिपूजक सनातनी के पीछे मारने को दौड़े, तो यदि वह किसी जैन मन्दिर में जाने से बच सकता हो, तो भी जैन के मन्दिर में न जायें किन्तु हाथी के सन्मुख मर जाना उससे (अर्थात् जैन मन्दिर में जाने से) अच्छा है, ऐसे निन्दा के श्लोक बनाए हैं। सो पुजारी, पण्डित और सम्प्रदायी लोगों ने चाहा कि इनके खण्डन के विना हमारी आजिविका न बनेगी। यह केवल उनका मिथ्याचार है। मुसलमानों की भाषा पढ़ने में अथवा कोई देश की भाषा पढ़ने में कुछ दोष नहीं होता, किन्तु कुछ गुण ही होता है। 'अपशब्दज्ञानपूर्वके शब्दज्ञाने धर्मः।' यह व्याकरण महाभाष्य (आन्हिक 1) का वचन है। इसका यह अभिप्राय है कि अपशब्द ज्ञान अवश्य करना चाहिए, अर्थात् सब देश देशान्तर की भाषा को पढ़ना चाहिए, क्योंकि उनके पढ़ने से बहुत व्यवहारों का उपकार होता है और संस्कृत शब्द के ज्ञान का भी उनको यथावत् बोध होता है। जितनी देशों की भाषायें जानें, उतना ही पुरुष को अधिक ज्ञान होता है, क्योंकि संस्कृत के शब्द बिगड़ के सब देश भाषायें होती वा बनती हैं, इससे इनके ज्ञानों से परस्पर संस्कृत और भाषा के ज्ञान में उपकार ही होता है। इसी हेतु महाभाष्य में लिखा कि अपशब्द–ज्ञानपूर्वक शब्दज्ञान में धर्म होता है अन्यथा नहीं। क्योंकि जिस पदार्थ का संस्कृत शब्द जानेगा और उसके भाषा शब्द को न जानेगा तो उसको यथावत् पदार्थ का बोध और व्यवहार भी नहीं कर सकेगा। तथा महाभारत में लिखा है कि युधिष्ठिर और विदुर आदि अरबी आदि देश भाषा को जानते थे। इस लिए जब युधिष्ठिर आदि लाक्षा गृह की ओर चले, तब विदुर जी ने युधिष्ठिर जी को अरबी भाषा में समझाया और युधिष्ठिर जी ने अरबी भाषा से प्रत्युत्तर दिया, यथावत् उसको समझ लिया। तथा राजसूय और अश्वमेध यज्ञ में देश–देशान्तर तथा द्वीप–द्वीपान्तर के राजा और प्रजास्थ पुरुष आए थे। उनका परस्पर अनेक देश भाषाओं में व्यवहार होता था तथा द्वीप–द्वीपान्तर में यहां के प्रजाजन जाते थे और वहां के इस देश में आते थे फिर जो देश–देशान्तर की भाषा न जानते तो उनका व्यवहार सिद्ध कैसे होता? इससे क्या आया कि देश–देशान्तर की भाषा के पढ़ने और जानने में कुछ दोष नहीं, किन्तु बड़ा उपकार ही होता है। विश्व की सभी भाषाओं के अध्ययन के पक्षधर स्वामी दयानन्द देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं को हिन्दी व संस्कृत की भांति देवनागरी लिपि में लिखे जाने के समर्थक थे जो राष्ट्रीय एकता की पूरक होती। उन्होंने एक प्रसंग में यह भी कहा था कि दयानन्द की आंखे वह दिन देखना चाहती हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश में चहुंओर देवनागरी अक्षरों का प्रचार व प्रयोग हो। इसका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं। अपने जीवन काल में स्वामी जी ने हिन्दी पत्रकारिता को भी नई दिशा दी। आर्य दर्पण (शाहजहांपुररू 1878), आर्य समाचार (मेरठरू 1878), भारत सुदशा प्रवर्तक (फर्रूखाबादरू 1879), देश हितैषी (अजमेररू 1882) आदि अनेक हिन्दी पत्र आपकी प्रेरणा से प्रकाशित हुए एवं पत्रों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

स्वामी दयानन्द ने हिन्दी में जो पत्रव्यवहार किया वह भी संख्या की दृष्टि से किसी एक धार्मिक विद्वान व नेता द्वारा किए गए पत्रव्यवहार में आज भी सर्वाधिक है। स्वामी जी के पत्र व्यवहार की खोज, उनकी उपलब्धि एवं सम्पादन कार्य में रक्तसाक्षी पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, रिसर्च स्कालर पं. भगवद्दत्त, पं. युधिष्ठिर मीमांसक एवं श्री मामचन्द जी का विशेष योगदान रहा। शायद ही स्वामी दयानन्द से पूर्व किसी धार्मिक नेता के पत्रों की ऐसी खोज कर उन्हें क्रमवार सम्पादित कर पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया हो और जीवन चरित्र आदि के सम्पादन में इन पत्रों से सहायता ली गई हो। स्वामी जी का समस्त पत्रव्यवहार चार खण्डों में पं. युधिष्ठिर मीमांसक के सम्पादकत्व में प्रकाशित है जो वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रकाशक मैसर्स श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली (हरयाणा) से उपलब्ध है। इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसका एक संशोधित संस्करण परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा प्रकाशित किया गया है जिसका सम्पादन आर्यजगत के विख्यात विद्वान डा. वेदपाल जी ने किया है। यह भी ज्ञातव्य है कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी आत्म–कथा सर्वप्रथम आर्यभाषा हिन्दी में लिखी। इस आत्म–कथा के हिन्दी में होने के कारण हिन्दी को ही इस बात का गौरव है कि आत्म–कथा साहित्य का शुभारम्भ हिन्दी व स्वामी दयानन्द से हुआ।

सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से वेदों के द्वारा ज्ञान की उत्पत्ति हुई थी। स्वामी दयानन्द के समय तक वेदों का भाष्य–व्याख्यायें– प्रवचन– लेखन– शास्त्रार्थ आदि संस्कृत में ही होता आया था। स्वामी जी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने वेदों का भाष्य जन–सामान्य की भाषा संस्कृत व हिन्दी दो भाषाओं में करके सृष्टि के

माता चन्द्रावती का अमृत महोत्सव सम्पन्न

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर जी की पूज्य माता चन्द्रावती जी का 75वाँ जन्मोत्सव आर्य समाज विकास पुरी बाहरी रिंग रोड दिल्ली में सो उल्लास मनाया गया। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य, प्रतिभा व ओम सपरा शॉल से अभिनंदन करते हुए।

आरम्भ से प्रवाहित धारा को उलट दिया। यह घटना जहां वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा से जुड़ी है, वहीं भारत की एकता व अखण्डता से भी जुड़ी है। न केवल वेदों का ही उन्होंने हिन्दी में भाष्य किया अपितु मनुस्मृति एवं अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों का अपनी पुस्तकों में उल्लेख करते समय उद्धरणों के हिन्दी में अर्थ भी किए हैं। वेदों का हिन्दी में भाष्य करके उन्होंने पौराणिक हिंन्दू समाज से ब्राह्मणों के शास्त्राध्ययन पर एकाधिकार को भी समाप्त कर जन–जन को इसका अधिकारी बनाया। यह कोई छोटी बात नहीं अपितु बहुत बड़ी बात है जिसका मूल्याकंन नहीं किया जा सकता। महर्षि दयानन्द के प्रयासों से ही आज वेद एवं समस्त शास्त्रों का अध्ययन हिन्दू व इतर समाज की किसी भी जन्मना जाति, मत व सम्प्रदाय का व्यक्ति कर सकता है। आर्यसमाज ने उन सबके लिए वेदाध्ययन व अपने गुरुकुलों के दरवाजे खोले हुए हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा हिन्दी को लोकप्रिय बनाकर उसे राष्ट्र भाषा के गौरवपूर्ण स्थान तक पहुंचाने में उनके साथ ही उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाजों एवं उनकी प्रेरणा से उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित बड़ी संख्या में गुरूकुलों, डी.ए.वी. कालेजों व अनेक आर्य संस्थाओं आदि का भी योगदान है। एक शताब्दी से अधिक समय पूर्व गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में देश में सर्वप्रथम विज्ञान, गणित सहित सभी विषयों की पुस्तकें हिन्दी माध्यम से तैयार कर उनका सफल अध्ययन–अध्यापन किया कराया गया। इस्लाम की धर्म–पुस्तक कुरआन को हिन्दी में सबसे पहले अनुंदित कराने का श्रेय भी स्वामी दयानन्द जी को है। यह अनुदित ग्रन्थ उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकरिणी सभा, अजमेर के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जो व्यक्ति जिस देश की भाषा को पढ़ता है उसको उसी भाषा व उसके साहित्य का संस्कार होता है। अंग्रेजी व अन्यदेशीय भाषायें पढ़ा व्यक्ति मानवीय मूल्यों पर आधारित भारतीय संस्कृति से सर्वथा दूर पाश्चात्य एवं वाममार्गी आदि भिन्न भिन्न जीवन शैलियों के अनुसार जीवन यापन करता है। यह जीवन पद्धतियां उच्च मर्यादाओं की दृष्टि से वैदिक संस्कृति से पीछे हैं। यदि वह संस्कृत व हिन्दी दोनों को पढ़ते और विवेक से निश्चय करते तो अवश्य ही वैदिक मर्यादाओं का पालन करते। कुछ ऐसी जीवन शैलियां है जिनमें पशुओं पर दया के स्थान पर उनको भोजन में सम्मलित किया गया है, जो सर्वसम्मत अंहिसा का नहीं अपितु हिंसा का उदाहरण है। जीवन में निर्दोष पशु या मनुष्यों की हिंसा का किसी भी रूप में प्रयोग अपसंस्कृति है और अंहिसा ही संस्कृति है। अतः स्वामी जी का यह निष्कर्ष भी उचित है कि हिन्दी व संस्कृत को प्रवृत्त कर ही प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, साहित्य, इतिहास व मानवीय मूल्यों की रक्षा की जा सकती है।

एक षडयन्त्र के अन्तर्गत विष देकर दीपावली 1883 के दिन स्वामी दयानन्द की जीवन लीला समाप्त कर दी गई। यदि स्वामी जी कुछ वर्ष और जीवित रहे होते तो हिन्दी को और अधिक समृद्ध करते और इसका व्यापक प्रचार करते। उनके तीव्र वेद प्रचार आदि कार्यों से देश की अधिक उन्नति व सुख–समृद्धि होती। इसी के साथ इस लेख को निम्न पंक्तियों के साथ विराम देते हैं।

कलम आज तू स्वामी दयानन्द की जय बोल,
हिन्दी प्रेमी रत्न वह कैसे थे अनमोल।'

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 737वां वेबिनार सम्पन्न

'मैं आर्य क्यों बनूँ' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सर्वांगीण उन्नति के लिए आर्य बनें –अतुल सहगल

सोमवार 1 सितम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में मैं आर्य क्यों बनूँ? विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह क़ोरोना से 737 वाँ वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने कहा कि आर्य शब्द जातिवाचक नहीं, गुणवाचक है। उन्होंने कहा कि आर्य कोई सांप्रदायिक ठप्पा नहीं,मानव की श्रेष्ठता का सूचक है। सबसे पहले इस बात को लिया कि मैं मनुष्य क्यों हूँ और अन्य प्राणियों व पशुओं से किस प्रकार भिन्न हूँ। इस अत्यंत दुर्लभ मानव देह में रहकर मैं जीवात्मा अपना विकास कर सकता हूँ और बार बार जन्म लेने और मरने के चक्र से मुक्त हो कर आधिभौतिक, आधिदैविक और अध्यात्मिक दुखों से छुटकारा पा सकता हूँ। इसी मानव शरीर के माध्यम से मैं परमानन्द की स्थिति में पहुँच सकता हूँ जब मैं ईश्वर के साथ पूर्ण रूप से जुड़कर लम्बी काल अवधि तक दिव्य आनंद भोग सकूंगा। आर्य शब्द के सही अर्थ व मानव जीवन के उद्देश्य को समझने वाले लोगों की संख्या विश्व में आज भी कम ही है।लोग भ्रान्ति और भ्रमजाल में जकड़े हुए हैं। हम आर्य बनें और अपना उद्धार करते हुए समाज का भी उद्धार करें। आर्य बनकर ही मैं धर्म को पूर्णता से समझ और ग्रहण कर पाऊँगा। आर्य बनकर ही मैं अपनी समस्त भौतिक इच्छाओं को पूरा कर के अपने अध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठा पाऊँगा। आर्य बनना अर्थात श्रेष्ठ, कार्यकुशल, नैतिक,परोपकारी व वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला बनना। मैं आर्य बनूँगा तो शांति, सद्भावना स्थापित करने वाला बनूँगा और शांति व सद्भावना की परिस्थिति में ही भौतिक समृद्धि की वृद्धि होती है। मैं जीवात्मा कोई रोग,दर्द, कष्ट, निर्धनता या उत्पीड़न नहीं चाहता, इसलिए मैं आर्य बनूँ। मैं अपने सपने साकार करना चाहता हूँ, इसलिए मैं आर्य बनूँ समैं ईश्वर को पाना चाहता हूँ, इसलिए आर्य बनूँ। मैं बड़े बड़े कार्यों में सिद्धि प्राप्त करना चाहता हूँ जिसके लिए मेरी सर्वांगीण उन्नति होनी चाहिए। इसके लिए मुझे आर्य बनना होगा.मुझे ग़हन अर्थ वाले वेद मन्त्रों में गोता लगाकर सत्य को समझना होगा। मुझे अपने विवेक को प्रबल करना होगा। अभ्यास व पुरुषार्थ के लिए मुझे स्वयं को तैयार करना होगा। इसके लिए मुझे वेदगामी बनकर स्वयं तो ऊपर उठना ही होगा पर सत्य और मानव धर्म का प्रचार,प्रसार कर ऋषि ऋण को भी चुकाना होगा। मुझे सच्चे अर्थ में मनुष्य बनना होगा, इन सब सैद्धांतिक और व्यवहारिक तथ्यों को सामने रखा। आर्य समाज के दस नियमों की चर्चा करते हुए कहा कि हम अनार्ष साहित्य का परित्याग करें और वेद एवं आर्ष ग्रंथों के अनुसार जीवन बिताएं। वेदों में आस्था रखें व तर्क और युक्ति पूर्ण व्यवहार के अनुसार अपनी दैनिक चर्या चलाएं। आर्य समाज के गण होने के नाते वेद के उदघोष श्मनुर्भवश को चरितार्थ करें। आर्य बनें और अन्य मनुष्यों को भी आर्य बनायें। मुख्य अतिथि डॉ.गजराज आर्य व अध्यक्ष कृष्ण कुमार यादव ने भी विषय की संपुष्टि की।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका जनक अरोड़ा, कमला हंस, सरला बजाज, उषा सूद, रविन्द्र गुप्ता, संतोष धर, कुसुम भंडारी आदि के मधुर भजन हुए।

दिल्ली स्टेट योग स्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2025 सम्पन्न

योग जीवन जीने की शैली है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

नई दिल्ली, रविवार 7 सितम्बर 2025, योग स्पोर्ट्स फाउंडेशन द्वारा दिल्ली स्टेट चौंपियनशिप 2025 का आयोजन आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में किया गया। प्रतियोगिता में दिल्ली व आसपास के विभिन्न स्कूलों और योग संस्थानों के 5 से 65 साल तक के युवक–युवतियों ने लगभग 400 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने किया उन्होंने कहा कि योग जीवन जीने की कला है यह केवल आसनों तक ही सीमित नहीं है अपितु पूरी दिनचर्या का नाम है बाबा रामदेव व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से सारा विश्व योगमय हो रहा है उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन होते रहने चाहिए।कार्यक्रम का कुशल संचालन शिवम मिश्रा व विकास कुमार ने किया। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,जे डी यू के वरिष्ठ नेता के सी त्यागी,धर्मपाल आर्य ने भी अपने विचार रखे और शुभकामनाओं दी। समापन समारोह में योग स्पोर्ट्स फाउंडेशन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. शिवम मिश्रा ने विजेता चौंपियन ऑफ चौंपियंस में पुरुष वर्ग में अमन कनोजिया विजेता तथा अक्षय पुरी उपविजेता रहे।महिला वर्ग में शायना ने विजेता तथा नव्या रावत ने उपविजेता का स्थान प्राप्त उन्हें पुरस्कृत किया गया। प्रमुख रूप से विकास कुमार ,अरुण आर्य,साक्षी रावत का विशेष योगदान रहा। विशेष अतिथियों में विश्वास त्यागी (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष,वाइएसएफ), अभिषेक त्यागी (प्रदेश सचिव जेडेयू) जगमोहन सिंह, नम्रता तिवारी, ऋषिकांत मिश्रा, धिराज सिंह (मुंबई), विवेक अग्निहोत्री (लखनऊ), उर्मिला जी, वरुण आर्य, निधि मट्टा, सुमित शर्मा, शशि शर्मा, प्रतिज्ञा जी, हप्रीत कौर एवं सत्यम दुबे जी उपस्थित थे।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970